दिनांक :- 28-04-2020

कालेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा

लेखक का नाम :- डॉ० फ़ारूक आज़म (अतिथी शिक्षक)

स्नातक :- द्वितीय खंड इतिहास
विषय :- प्रतिष्ठा इतिहास
श्रेणी :- तृतीय
पत्र :- चतुर्थ
अध्याय :- तैपिंग विद्रोह

(3) सामाजिक सुधार :- तैपिंग विद्रोह शासन ने सामाजिक सुधार पर ध्यान दिया। इसने महिलाओं की दुरवस्था पर चिन्ता प्रकट की और उनकी सामाजिक स्थिति को उन्नत करने का प्रयास किया। स्त्रियों को पुरुषों की तरह समान अधिकार दिया गया। औरतों का पैर बाँधकर रखने की प्रथा चीन में मिंग-काल से प्रचलित थी जिसे तैपिंग शासन ने अवैध घोषित कर दिया। औरतों को सम्पत्तिक अधिकार भी दिया गया। उन्हें भी पति

Scanned with CamScanner

योगिता परीक्षाओं में बैठना और सरकारी नौकरी प्राप्त करने की अनुमति दी गई। यहाँ तक कि उन्हें सेना में भर्ती होने के लिए भी अवसर दिया गया। स्त्रियों के क्रय-विक्रय वेश्यावृत्ति, बहुविवाह और दहेज प्रथा पर प्रतिबंध लगा दिया गया। स्त्रियों के लिए घरेलु काम अनिवार्य था। उन्हें रेशम के कीड़े पालना और कपड़ा बुनना पड़ता था। इस प्रकार के वातावरण में परस्पर सहयोग और नैतिकता को अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए जहाँ तक सम्भव हो सका। उनका कार्यक्षेत्र पुरुषों से पृथक् रखा गया। तेपिंग शहरों को महिलाओं के प्रति सम्मान तथा पवित्र भावनाएँ रखने का ईश्वरीय आदेश दिया गया। इस तरह शताब्दियों के बाद तेपिंग प्रशासन में स्त्रियों को पहली बार स्वतंत्रता से साँस लेने का अवसर प्राप्त हुआ। अन्य सामाजिक सुधारों में दास प्रथा मूर्तिपूजा, सट्टेबाजी, शराब, अफीम, तम्बाकू आदि के सेवन पर प्रतिबंध मुख्य थे।

(4) अपवित्र गठबन्धन :- तैपिंग विद्रोह के फलस्वरूप विदेशियों और मंचू सरकार के बीच अपवित्र गठबंधन कायम हुआ चीन के राष्ट्रीय जीवन के लिए यह एक कलंक साबित हुआ। विद्रोह दमन में विदेशियों ने मंचू प्रशासन की बड़ी मदद की थी। अतः विद्रोह-दमन के बाद सरकार पर विदेशियों का प्रभुत्व छा जाना स्वाभाविक था। सेना शासन तथा विदेश नीतियों में विदेशियों का प्रभाव बढ़ने लगा। चीन के राजनीतिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक जीवन में यह अभिशाप साबित हुआ। चीन राष्ट्रवाद को कुचलने में पश्चिमी साम्राज्यवाद ने मंचू-शासन को अपना दास्त बनाया। यह साजिश दीर्घकाल तक सक्रिय रही।

(5) मंचू सरकार की निर्बलता :- तैपिंग विद्रोह ने मंचू सरकार की निर्बलता स्पष्ट कर दी गई। कई जगह शाही फौज को विद्रोहियों द्वारा पराजित होना पड़ा था।

Scanned with CamScanner

उत्तर में हानयाँग, फूचाँग, वूहू, आदि महत्वपूर्ण प्रांतो पर विद्रोहियों का अधिकार हो गया। नानकिंग में मंचू सेनाएँ बुरी तरह से पराजित हुई। चिंकयांग, यांगचाओ, क्योचाओ आदि प्रांतो पर विद्रोहियों का अधिकार हो गया। इस तरह दक्षिण के अधिकांश प्रान्तो पर तेपिंग शासन शुरू हुआ। मंचू सरकार की निर्बलता स्पष्ट हो गई।

(6) राष्ट्रीयता का विकास - तेपिंग विद्रोह ने चीन में राष्ट्रीयता की भावना उत्पन्न की। 1850 से 1864 तक चीन का राजनीतिक जीवन बड़ा अशान्त था। वह तेपिंग विद्रोह काल था। इस समय चीनियों में बड़ा जागरण आया। वे विदेशी-विरोधी, ईसाई-विरोधी एवं मंचू विरोधी हो गए। वे राष्ट्रीयता-जैसी पवित्र और व्यापक भावना से उद्वेलित होने लगे। वे समझ गए कि मंचू सरकार और विदेशियों में अपवित्र गठबंधन है। वे इससे मुक्ति पाने के लिए सतत प्रयत्नशील हो गए।

Scanned with CamScanner

(7) धन-जन की अपार क्षति :- ताईपिंग विद्रोह के फलस्वरूप धन-जन की अपार क्षति हुई। विद्रोह के फलस्वरूप हुनान हुपेह, क्वांगसी आदि ग्यारह प्रांतों में बड़ी अराजकता मच गई। वहां चुंगी या भू-राजस्व की वसूली कठिन हो गई। कुछ क्षेत्र में तो विद्रोह के चलते इतना उजड़ गये थे कि विद्रोह-दमन के पश्चात् भी यहां से राजस्व वसूलना मुश्किल हो गया। इससे सरकार की वित्तीय स्थिति अत्यन्त ही शोचनीय हो गई। इस समय सरकार को अफीम युद्ध की क्षतिपूर्ति करने तथा सेना में सुधार लाने के लिए काफी द्रव्य की जरूरत थी लेकिन विद्रोह के घाव भरे नहीं थे। विद्रोह प्रभावित प्रांतों के लोग चुंगी या भू-राजस्व देने में असमर्थ थे। विद्रोह के फलस्वरूप काफी लोग मारे भी गए। कहा जाता है कि विद्रोह की लपेट में दो-तीन करोड़ लोगों

को जान गवाँनी पड़ी। इस भीषण हत्याकांड का एक सुपरिणाम तो यह अवश्य हुआ कि चीन की जनसंख्या में कुछ कमी आई।

(8) नई कर-पद्धति - तेपिंग विद्रोह ने एक नई कर पद्धति को जन्म दिया। विद्रोह के समय केन्द्रीय सरकार वित्तीय संकट में उलझ गई। अतः इसने आन्तरिक पारगमन पर लगाया। इससे काफी आय हुई। 1931 तक यह पद्धति लागू रही। किंतु इससे चीन के औद्योगिक विकास को क्षति उठानी पड़ी। इसी तरह विद्रोह के समय दक्षिण के प्रांतों में बड़ी अशांति मची हुई थी। वहाँ चुंगी की नियमित वसूली नहीं हो रही थी। अतः अल्पकाल के लिए चुंगी-वसूली का दायित्व शंघाई-स्थित विदेशियों पर सौंप दिया गया। किन्तु विद्रोह-दमन के बाद भी यह काम विदेशी ही करते रहे। 1930 में इस पद्धति का उन्मूलन किया गया।

प्रकृति :- तेपिंग विद्रोह अंशतः किसानों की क्रांति और

अंशतः मंचू सरकार के विरुद्ध राष्ट्रीय जागरण था। मंचू शासन-काल में किसानों की दुरवस्था बढ़ गई थी। वे कर के बोझ से दब गए। कृषि में सुधार के लिए कुछ नहीं किया गया था। देश में बाढ़, महामारी अकाल आदि का दौरा-दौरा बना रहता था। अतः अपनी दुर्दशा से तंग आकर किसानों ने विद्रोह कर दिया।

चीन में विदेशियों का प्रभाव बढ़ रहा था। प्रथम अफीम युद्ध के बाद विदेशियों के हौसले और भी बढ़ गये थे। मंचू सरकार विदेशियों के बढ़ते प्रभाव को रोकने में असफल रही थी। अतः देशभक्त चीनियों ने इसमें अपना राष्ट्रीय अपमान देखा। उन्होंने एक मंचू शासन के विरुद्ध विद्रोह किया। अतः तैपिंग विद्रोह मंचू सरकार के विरुद्ध अंशतः राष्ट्रीय जागरण था। प्रारंभ में विदेशियों का विस्तार से विचार था कि तैपिंग सिद्धान्त ईसाई मत के लिए गये है